आज़ादी की लड़ाई में महिलाओं का योगदान

मधु और भारत डोगरा

देश की आज़ादी की लड़ाई में महिलाओं ने मेरणादायक भूमिका निभाई। हम कभी उन्हें 1857 की लड़ाई के मैदानों में वीरांगनाओं के रूप में, कभी भारत छोड़ो आंदोलन में सत्याग्रहियों के रूप में लाठी झेलते हुए, कभी आज़ाद हिंद फ़ौज की झांसी की रानी रेज़ीमेंट में बर्मा के जंगलों में युद्ध की तैयारी करते हुए, तो कभी बंगाल के क्रांतिकारी आंदोलन में साहसी हमले करते हुए देखते हैं। सत्याग्रह में विदेशी कपड़े के बहिष्कार और शराब की दुकानों के विरोध में उनका विशेष महत्व था। इन धरनों में उन्होंने बहुत ही हिम्मत से योगदान दिया। बंगाल के क्रांतिकारी आंदोलन में युवतियों की विशेष भूमिका देखी गई। यहां हम कुछ महिला स्वतंत्रता सेनानियों के साहस व बलिदान की एक झलक प्रस्तुत कर रहे हैं।

रानी चेनम्मा

कर्नाटक की एक छोटी-सी रियासत कित्तूर की रानी चेनम्मा ने उनका राज्य हथियाने की ब्रिटिश कोशिशों के खिलाफ़ वर्ष 1824-25 में बहुत बहादुरी से युद्ध किया। 23 अक्तूबर को अंग्रेज़ सेना ने कित्तूर के किले को घेरा तो रानी चेनम्मा की सेना ने अचानक बहुत ज़ोरदार हमला कर अंग्रेज़ सेना को बुरी तरह हरा दिया। इससे पहले रानी की हिरासत में जो ब्रिटिश महिलाएं व बच्चे आ गए थे उन्हें जरा भी नुकसान नहीं पहुंचाया गया और बहुत आराम से रखा गया। युद्ध के समय रानी घोड़े पर सवार होकर स्वयं मौजूद रहीं।

दिसंबर के आरंभ में कहीं अधिक भारी-भरकम

अंग्रेज़ी सेना ने फिर कित्तूर पर हमला किया और इस बार बहुत बहादुरी से लड़ने के बाद भी रानी चेनम्मा की पराजय हुई। उन्हें गिरफ़्तार कर एक किले में रखा गया जहां लगभग 5 वर्ष बाद उनकी मृत्यु हो गई।

झांसी की रानी

झांसी की रानी और अंग्रेज़ों का झांसी में मार्च 1858 में 17 दिनों का घमासान युद्ध हुआ। लक्ष्मीबाई ने स्वयं युद्ध में शानदार हिस्सा लिया और बहुत बहादुरी से अपने किले की रक्षा की। अन्य स्त्रियों की भूमिका भी बहुत बहादुरी की रही। उन्होंने तोपें चलाने और बारूद भरने का काम भी किया।

जब किले को बचाना संभव नहीं रहा तो रानी ने बहुत कुशलता और वीरता से किले से निकलकर कालपी की ओर प्रस्थान किया। रानी का पीछा कर रहे बेकर को रानी व उनके साथियों ने खदेड़ दिया।

कालपी में रानी ने 'लाल कुर्ती' की बहादुर सेना संगठित की। बांदा के नवाब और तांत्या टोपे का सहयोग भी मिला, पर जल्द ही अंग्रेज़ों की कहीं अधिक शक्तिशाली सेना ने उन पर हमला किया। अब रानी और उनके सहयोगियों ने ग्वालियर की ओर कूच किया। ग्वालियर में वहां की फौज का बड़ा हिस्सा झांसी की रानी से आ मिला। शीघ्र ही ग्वालियर पर भी अंग्रेज़ों ने भारी-भरकम हमला किया। आख़िरी समय तक अपनी वीरता से अंग्रेज़ों को अचंभित करते हुए रानी ने शहादत प्राप्त की। आज तक भारतवासी याद करते हैं– 'खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी।'

झलकारी

झांसी की रानी की जिन सखियों ने झांसी के युद्ध में अपनी शौर्य की कहानी लिखी उनमें झलकारी का विशेष स्थान है। जब रानी को किले से निकालना था तो झलकारी स्वयं रानी की वेशभूषा में किले से बाहर आ गई। उसे लक्ष्मीबाई समझकर अंग्रेज फौज उसकी ओर झपटी जिससे वास्तविक लक्ष्मीबाई को बाहर निकलने का अवसर मिल गया। वह बहादुरी से लड़ते हुए अंग्रेज़ों की गिरफ़्तारी में आ गई, पर रात को इस गिरफ़्तारी से भाग निकली। अगले दिन अंग्रेज़ यह देखकर हैरान रह गए कि वह अपने तोपची पति पूरनसिंह के पास खड़े होकर उसकी सहायता कर रही थी। जब पूरनसिंह मारे गए तो झलकारी ने स्वयं तोप का संचालन तब तक किया जब तक उसने स्वयं वीरगति प्राप्त नहीं की।

बेगम हज़रत महल

अवध में अंग्रेज़ों के खिलाफ़ 1857 में विद्रोह

हुआ तो बेगम हज़रत महल ने नेतृत्व की महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। बेगम सरफ़राज़ महल ने उनके बारे में लिखा, 'हज़रत महल खुद हाथी पर बैठकर आगे-आगे अंग्रेजों से मुकाबला करती है। आंख का पानी ढल गया है, उनको डर बिल्कुल नहीं लगता।'

बेग़म हज़रत महल ने महिलाओं को भी सेना में संगठित किया। बाद में जब अंग्रेज अवध में घुसे तो एक महिला पेड़ पर चढ़कर उन पर गोलियां दागती रही।

मार्च 1858 में अंग्रेज़ों की जीत के बाद भी हज़रत महल ने घुटने नहीं टेके। अपने बेटे विरजीस को लेकर वे नेपाल चली गई। जहां 1879 में उनका देहांत हुआ।

कनकलता बरुआ

असम के जिला दरंग की 16 वर्षीय इस छात्रा ने 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में गोहपुर पुलिस स्टेशन की ओर बढ़ रहे एक जुलूस का नेतृत्व किया। पुलिस स्टेशन पर तिरंगा लहराते हुए पुलिस की गोली से 20 सितंबर 1942 को इस वीरांगना ने शहादत प्राप्त की।

वनलता दासगुप्ता

बंगाल की वनलता दासगुप्ता ने बहुत कच्ची उम्र में ही क्रांतिकारी गतिविधियों में हिस्सा लिया। बहुत समय जेल में बिताने के बाद केवल 21 वर्ष की अल्पायु में 1 जुलाई 1936 को इनका देहांत हो गया।

प्रीतिलता वडेदर

बंगाल की इस दिलेर छात्रा ने सूर्यसेन के नेतृत्व में अनेक क्रांतिकारी गतिविधियों में हिस्सा लिया। चटगांव जिले में पुलिस से घिरने के बाद भी बहुत मुस्तैदी से वे बच निकलने में सफल रहीं। इसी जिले में एक योरोपियन क्लब पर असफल हमला किया व पुलिस के हाथ में पड़ने के स्थान पर ज़हर खा लिया।

मातागनी हाज़रा

मातागनी हाज़रा ने सविनय अवज्ञा आंदोलन, नमक सत्याग्रह, चौकीदार टैक्स के विरोध व भारत छोड़ो आंदोलन में आगे बढ़कर हिस्सा लिया और जेलयात्रा की। 29 सितंबर, 1942 को टसलुक सिविल कोर्ट की ओर बढ़ रहे जुलूस का नेतृत्व किया और वहां तिरंगे को लहराते समय पुलिस की गोली का शिकार हुई। एक वृद्ध महिला के इस साहस पर लोग नतमस्तक थे।

कुमलीनाथ

20 सितंबर, 1942 को असम के दरंग जिले में टेकियाजुली पुलिस स्टेशन की ओर जा रहे जुलूस में 64 वर्षीय कुमली नाथ भी शामिल थीं। तिरंगा हाथ में लिए हुए बेटे को पुलिस ने अपनी गोली का निशाना बनाया। मां ने छलांग मारकर यही गोली अपने सीने पर ले ली और सैकड़ों नतमस्तक लोगों के आगे वहीं शहादत प्राप्त की। □